आकाश में आकाश भर जगह

चंद्रकांत सिंह

अनुक्रम

- गीत की संभावना. 13
- पत्ते का टूटना 14
- यह जीवन रीता जाता है 15
- अलिखित अज्ञात 16
- जीवाश्म 18
- पहाड़ जीने का सलीका सिखाते हैं 20
- खुले द्वार 22
- आकाश में आकाश भर जगह (1) 23
- आकाश में आकाश भर जगह (2) 25
- आकाश में आकाश भर जगह (3) 27
- ऊँचाई 28
- गढ़ी जाती हैं मूरतें 30
- निशान 31
- यह मेरा देश ! 33
- समय की सलीब पर गीत 37
- कई बार 38
- फूल और सौन्दर्य 39

आकाश में आकाश भर जगह
(2)

मुझे देना आकाश थोड़ा नीला रंग
ताकि इसमें डूब सकूँ
जानता हूँ तुम्हारा रंग गहरा है
और मैं बहुत उथला हूँ
फिर भी चाहता हूँ गहरा सुनील रंग
ताकि रोम-रोम भर सकूँ
जीवन की तूलिका में छिपे हैं कई रंग
किन्तु हर बार
मैं लौटता हूँ तुम्हारी ओर
उत्साह, उमंग, प्रसन्नता लिये हुए
जीवन के बौने गड्ढों से उठते हैं उद्दाम भाव
मैं थिर तुम्हारी गोलाई मापता हूँ
और प्रायः रिक्त हो जाता हूँ
मैं जब भी आँखें बंद करता हूँ
घुप्प शान्ति उतरती है अन्तस् में
मैं मौन से भरता जाता हूँ
तुम्हें ठिठक कर देखने मात्र से
एक गहरा नीला रंग उभरता है चित्त में